Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 8, August - 2023 Publication Date: 31/08/2023

DOIs:10.2018/SS/202308011 --:-- Research Paper / Article / Review

आत्मद्वंद्व का दर्शन 'रक्तपात' कहानी में

Dr. Ida Manuel

Assistant Professor, Department of Hindi, Govt.Victoria College, Palakkad, Kerala

Email - hindiida@gmail.com

सारांश: मनुष्य के भीतर और बाहर के रक्तपात को एक साथ देख लेने की अद्भुत सामर्थ्य दूधनाथ सिंह की कहानियों मे देखते है | उन्होंने मनुष्य के गहरे आत्मद्वंद्व और परिस्थितियों की भयावहता को एक साथ समेटने की रचनात्मक कोशिश लगातार की है | विवेकशील मुनष्य किस तरह एक निरीह प्राणी में तब्दील हो जाता है, इसको दिखाने का प्रयास उनकी 'रक्तपात' कहानी में दृष्टव्य है | स्थितियों, दृश्यों और घटनाओं का जो भयावह कोलाज दूधनाथ सिंह की कहानियों में मिलता है, वह बेहद संतुलित और अकृत्रिम है | छोटी-सी घटना के भीतर वह ऐसी ट्रेजेडी की तलाश कर दिखाते हैं कि वह हमारे भीतर खुबकर रह जाती है | आधुनिक हिंदी कहानी को उन्होंने न सिर्फ एक सजग भाषा दी है, बल्कि एक तराशा हुआ शिल्प भी |

मूल शब्द: मध्यवर्ग, जीवन्त जिरह, प्रतिबद्ध, बेसहारेपन, द्वन्द्व तथा शहरी ठंडेपन, विचित्र बेचारिगी, तब्दील |

कहानीकारों में जिन्होंने आधुनिकता को ईमानदारी से आत्मसात् करते हुए रचनाकर्म जारी रखा हैं उनमें दूधनाथ सिंह का नाम महत्वपूर्ण है | दूधनाथ सिंह की कहानियां मध्यवर्ग की ढोंगभरी सामाजिक संरचना के विरुद्ध सवाल उठाती हैं। 'वे इन्द्रधनुष', 'सीखचों के भीतर', 'आज इतवार था', 'रीछ', 'रक्तपात', 'मम्मी तुम उदास क्यों हो', 'बिस्तर', 'इंतजार', 'आइसबर्ग' उनकी प्रारंभिक दौर की महत्वपूर्ण रचनाएं हैं | 'सुखांत' और 'नमो अंधकारम्' जैसी कहानियों से दूधनाथ सिंह के रचना-वैविध्य की झलक मिलती है | दूधनाथ सिंह की औपन्यासिक संरचना में 'आखिरी कलाम' हिंदू फासीवादी खतरे की पृष्ठभूमि में एक ऐसी जीवन्त जिरह है, जो धर्म, धर्मनिरपेक्षता, जनतन्त्र, मीडिया, मुसलमान, वामपंथ से लेकर लोहियावादी राजनीति तक का विस्तार लिए है। यह उपन्यास बाबरी मस्जिद के विध्वंस के पहले और बाद के सांप्रदायिक माहौल का सजीव चित्रण करता है। दूधनाथ सिंह का मानना था कि 'एक लेखक का दायित्व है कि वह अपने समय की सामाजिक समस्याओं का चित्रण करे। उन समस्याओं के प्रति प्रतिबद्ध रहे लेकिन कोई भी लेखक समाज को बदलने का अगर सपना देखता है तो वह पूरा नहीं हो सकता क्योंकि समाज एक लेखक की रचनाओं से नहीं बदलता, उसके बदलने के अपने तर्क होते हैं।'[1]

दूधनाथ सिंह की कहानियां पाठकों का खास ध्यान खींचती हैं और कुछ तो प्रतीकात्मक, उलझी हुई, जटिल और चमत्कारपूर्ण होती हैं। ये मध्यवर्ग की ढोंगभरी सामाजिक संरचना के विरुद्ध सवाल उठाती हैं। ' ग्रामीण परिवेश यानी अपनी जड़ों से विलग, वियुक्त होकर शहर आने पर बेरोजगार और बेसहारा बने दूधनाथ सिंह की शुरूआती कहानियों में एक विलगाव और बेसहारेपन का चित्रण ही प्रमुख रूप से मौजूद है। 'रक्तपात', 'आइसबर्ग' और 'सपाट चेहरे वाला आदमी' जैसी शुरुआती कहानियों में परिवेश से विलगाव और बेसहारेपन के दुख-दर्द की अभिव्यक्ति साफ तौर पर देखी जा सकती है। उनकी शुरुआती कहानियों में गांव से अलग हुए एक युवक की तकलीफों और असामंजस्य की ईमानदार अभिव्यक्ति मिली है। गांव और शहर का द्वन्द्व तथा शहरी ठंडेपन में निगल लिए जाने के भय एवं चीत्कार को उनकी शुरुआती कहानियों में देखा-सुना जा सकता है।

डॉ गंगाप्रसाद विमल, जगदीश चतुर्वेदी, रवीद्र कालिया, दूधनाथ सिंह,प्रयाग शुक्ल, ज्ञानरंजन, विश्वेश्वर आदि 'अकहानी' आन्दोलन के पक्षधर कहानीकारों में है | अकहानी के पात्र घोर व्यक्तिवादी और स्वात्वलीन है | इनमें संबंधों को टूटने का पीडानुभव है, जिसका नई कहानी में नितांत अभाव है | दूधनाथ सिंह की 'रक्तपात', बलदेव देव की 'रात', रमेश बक्श की 'पिता दरपिता', गंगा प्रसाद की 'शीर्षक हीन', जैसी कहानियाँ सम्बंधमूलक संवेदनाओं से जुडी हैं |

सातवें दशक के प्रारंभिक चरण की महत्वपूर्ण कहानी है 'रक्तपात' | इस कहानी में एक प्रवासी युवक की पारिवारिक प्रेम सम्बन्धों के बीच उपस्थित झंझावातों और बिखरावों की कचोट भरी स्मृतियां हैं। इसमें दादा-पिता-मां-बहन और पत्नी से असहज और तनाव भरे सम्बन्धों की अभिव्यक्ति में पारिवारिक जीवन की विचित्र बेचारिगी का ऐसा रूप प्रस्तुत हुआ है कि पाठक स्वयं उसका हिस्सेदार महसूस करने लगता है।

जीवन प्रसंगों में छिपी ट्रेजेडी को अपनी ही तरह से चीन्हती है यह कहानी | वास्तव में प्रवासी का मन अनर्द्वन्द्व से गुज़रता है | इसके कारण दो विभिन्न संस्कृतियों का टकराव है | यह सांस्कृतिक आघात प्रवासियों के व्यक्तित्व का अंश बना जाता है | 'रक्तपात' कहानी के प्रमुख पात्र इसीप्रकार के व्यक्तित्ववाला है |

कहानी की शुरुआत में कोई भूमिका नहीं, सीधे शुरू हो जाती है | पहली आहट के साथ पत्नी और फिर विक्षिप्तप्राय बुढ़िया मां से मिलवाते हुए क्रमशः एक संवाद आता है पत्नी का : "सो न जाइएगा, हां |" एक ओर मां की दुखद स्थिति है, दूसरी ओर, पत्नी का आवेगमय व्यवहार और तीसरी ओर, खुद में बंधा-सिमटा-सा कथानायक है | वर्तमान में होते हुए भी अतीत में लौट-लौट जाता यह नायक आत्मालोचना से भी गुरेज नहीं करता | उसे याद आता है कि दादा द्वारा पिता की मृत्यु की सूचना भेजे जाने पर उसने कैसे छल किया था | जिनके यहाँ वे रहता था, उन्हीं के लड़के से चिट्ठी लिखवा दी ... 'संजय यहाँ नहीं है | बाहर गये है | कब तक लौटेंगे, किसी को पता नहीं |'[2] वे कहानी के बीच में याद दिलाता है की दादा की चिट्ठियाँ आती रही थी और वे उत्तर में लिख देता था कि 'आगे चिट्ठी तभी लिखूंगा तब बीमार पड़ूंगा | न लिखूं तो समझना कि बेटा आराम से है' |

विदेश में अंजान परिवेश में रहकर प्रवासी भारतीय परायापन, घुटन, पीड़ा, भय, अकेलापन खलता है | सांकेतिक भाषा में कहानी बताती है कि पिता-पुत्र के बीच तनाव भी अकारण नहीं है | लेकिन मां इस सबके बीच पिसती आज इस हालत में आ पहुंची है कि 'बुढ़िया' हो गई है | बहुत चुपके से दूधनाथ सिंह उस डिटैचमेंट को खेल डालते हैं जो संबंधों की चूलें हिला रहा है | यह नायक एक मनःस्थिति-विशेष में जीता रहा है | उसे लगता है, सभी ने उसे छोड़ दिया है | कहानी बताती है कि आत्मीयता का तार अगर एक झटके में टूटने को हो आता है तो फिर उसे जुड़ने में भी बहुत वक्त नहीं लगता, बशर्ते स्थितियां साथ दे जाएं |

अरसे बाद घर लौटा नायक एक-एक चीज याद करता है - आत्मीय परिवेश में खुद को मिसफिट-सा पाता हुआ | एक बार पिता की मृत्यु के बाद और फिर दादा का साथ घर लौटे | बचपन की यादें आती रहीं | बहन आरती का रूप ...| आरती का नन्हा रूप | फिर उसका बड़ा सा भव्य रूप | उनको मन अजीब – अजीब सा लगा था | इसी सबके बीच पत्नी कभी झमककर निकल जाती है तो कभी सिर्फ अपने व्यवहार से उसका ध्यान खींचना चाहती है | मां से उसका एक अर्थहीन-सा संवाद होता है क्योंकि अपने होने को भूल चुकी है बूढ़ी मां | अपने ही घर में वे एक अतिथि सामान लगा | आरती माँ से अपने आगमन की सूचना देती तो बुढिया चुप ही रही थी | अपनी द्वंद्व को ये नायक इसप्रकार प्रकट करते है कि '... खोना किसे कहते हैं ..... निसहाय होना किसे कहते है .... मूक होना किसे कहते है .... अर्थहीन होना किसे कहते है .. यह सबका सब अन्दर में स्पष्ट हो गया | वे सदा चुप ही रहा जाता है | लगा कि कई जन्मों से वह इसी तरह चुप है |'[3]

इस सबके बीच, लंबे समय से प्रतीक्षारत स्त्री के शरीर की जागी हुई भूख कहानी में प्रवेश करती है तो दूधनाथ सिंह का कथाकार सजग हो उठता है | वह एक-एक मुद्रा को बारीकी से पकड़ता है : "जैसे कोई झाड़ी में छिपे खरगोश को पकड़ने के लिए धीमे-धीमे कदम बढ़ाता है, उसी तरह उन्होंने कान के पास मुंह ले जाकर एक-एक शब्द नापते हुए कहा : "मैं...कहती...हूं- प्यार कर लूं?" |[4]

लेकिन बीच में बुढ़िया मां द्वारा पैदा किया अवरोध कहानी को एक अलग ही तनाव में डाल देता है | शरीर की भूख कितनी अंधी होती है, यह कहानी का अंत बताता है जहां यौन पिपासु पत्नी द्वारा बूढ़ी मां को धकेल दिए जाने के बाद का दृश्य खुलता है | यहां नायक पत्नी के सामने खुद को कमजोर पाता है तो इसके तर्क भी हैं | उसे पत्नी के साथ संवाद याद हो आते हैं कि 'पलंग ले चले तो बरसाती में मैं नहीं जाती .... इतनी गर्मी में उस काल - कोठरी में मुझसे नहीं सोया जाएगा |' पत्नी कहती है कि 'माँ की चारपाई ज़रा बरसाती में ले चलिए तो |'[5]

भीतर और बाहर के रक्तपात को एक साथ देख लेने की यह अद्भुत सामर्थ्य तब दूधनाथ सिंह के जरिये पहले-पहल देखने को मिली थी | उन्होंने मनुष्य के गहरे आत्मद्वंद्व और परिस्थितियों की भयावहता को एक साथ समेटने की रचनात्मक कोशिश लगातार की है| विवेकशील मुनष्य किस तरह एक निरीह प्राणी में तब्दील हो जाता है, यह वह बार-बार देखने की कोशिश करते नजर आते हैं स्थितियों, दृश्यों और घटनाओं का जो भयावह कोलाज दूधनाथ सिंह की कहानियों में मिलता है, वह बेहद संतुलित और अकृत्रिम है|

छोटी-सी घटना के भीतर वह ऐसी ट्रेजेडी की तलाश कर दिखाते हैं कि वह हमारे भीतर खुबकर रह जाती है आधुनिक हिंदी कहानी को उन्होंने न सिर्फ एक सजग भाषा दी है, बल्कि एक तराशा हुआ शिल्प भी |

संदर्भ सूची :

1. समकालीन हिन्दी कहानी सरोकार और विमर्श : सं. श्यामसुंदर पाण्डेय, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 45
2. अन्तिम दशक की कहानियों में चित्रित विभिन्न परिवेश : डॉ. संजय एल. मादार, शारदा प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ 83
3. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापन : डॉ. रूबी एलसा जेकब, विद्या प्रकाशन,कानपुर,पृष्ठ 34
4. प्रम कथा का अंत न कोइ (कहानी संग्रह) : दूधनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन,दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 48
5. सपाट चहरे वाला आदमी (कहानी संग्रह) : दूधनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 46